श्री राधा मोहन सिंह जी,
माननीय मंत्री, कृषि और कृषक कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार।

महोदय,

विषय: देश में जैविक खेती की रक्षा हेतु संशोधित जीन वाली(जीएम) सरसों के किसी भी रूप का अनुमोदन रोकने बारे

नमस्ते। प्रारम्भ में हम आपके नेतृत्व में देश में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए नए कदमों के लिए आप का हार्दिक धन्यवाद करना चाहते हैं। कृषि भवन परिसर में एक पीजीएस आधारित जैविक दुकान खुलने की खबर सुन कर हमें बेहद प्रसन्नता हुई है। इस से लगता है कि अंतत जैविक कृषि को भी देश की कृषि विकास योजनाओं में एक स्थान मिल गया है हालांकि अभी एक लंबी यात्रा बाकी है। हमें यह भी पता चला है कि आप के मंत्रालय द्वारा जैविक और गैर-रासायनिक खेती पर गठित टास्क फोर्स ने एक विस्तृत और व्यापक रिपोर्ट दे दी है। हमें आशा है कि ये सिफ़ारिशें देश में जैविक खेती के प्रसार में सहायक सिद्ध होंगी।

मान्यवर, आज हम आप के पास एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आपात समस्या ले कर आए हैं। अब जब सरकार ने कृषि क्षेत्र में आजीविका को स्थायी बनाने में, हमारे पर्यावरणीय संसाधनों के संरक्षण में और सभी नागरिकों को सुरक्षित भोजन उपलब्ध कराने में जैविक खेती के महत्व को स्वीकार कर के नई पहल की है, जब किसान भी अनुकूल सरकारी वातावरण और समर्थन के चलते उत्साह से जैविक खेती अपना रहे हैं, हमारे सामने एक अभूतपूर्व संकट आन खड़ा हुआ है।

संशोधित जीन वाली (जीएम) सरसों का संभावित अनुमोदन (जो मंजूरी मिलने पर भारत की पहली खाद्य जीएम फसल होगी) जैविक खेती आंदोलन के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है। जैसा कि आप जानते ही हैं भारत सहित पूरी दुनिया में जैविक खेती में जीएम फ़सलों के प्रयोग पर कानूनन रोक लगाई गई है परन्तु एक बार जीएम बीज पर्यावरण में फैलने के बाद जैविक किसानों का इस से बच पाना मुश्किल है। जब पड़ोस में जीएम फ़सलों को बोया जा रहा हो तो कानूनी रूप से भी और वास्तव में भी जैविक खेती संभव नहीं है क्योंकि इन जीएम फ़सलों द्वारा अन्य क़िस्मों का सम्मिश्रण/प्रदूषण अवश्यंभावी है। जीएम सरसों के मामले में भी यह वास्तविक चिंता का विषय है। सम्मिश्रण जैविक (पराग प्रवाह के कारण) और भौतिक (उत्पादन और उत्पादन के बाद की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में मिश्रण से), दोनों तरह से हो सकता है। **इस से सदियों से चलती आ रही हमारी देसी क़िस्मों की शुद्धता हमेशा के लिए खत्म हो सकती है।** इस से जैव विविधता भी प्रभावित होगी। जैव विविधता जैविक खेती का मूल आधार है। जैविक और जीएम पद्धति की असंगति के विषय पर एक छोटी सी पुस्तिका भी आप के आलोकनार्थ संलग्न कर रहे हैं।

जीएम सरसों न केवल सरसों की जैविक खेती करने वाले किसानों (चाहे वे इस की खेती मुख्य फसल के तौर पर करते हैं या गेहूं इत्यादि में अंतर फसल के रूप में) बल्कि सभी जैविक किसानों के

लिए चिंता का विषय है क्योंकि जैविक किसान सरसों की खल को मिट्टी की उत्पादकता बढ़ाने के लिए भी प्रयोग करते हैं।

यह जीएम सरसों खरपतवारनाशक सहनशील भी है। इस लिए इस पर किए जाने वाले खरपतवारनाशकों का प्रवाह पड़ोस के जैविक किसान की फसल पर होने से न केवल उस की गैर-खरपतवारनाशक सहनशील फसल को नुकसान होगा बल्कि रासायनिक प्रदूषण से उस के खेत की जैविकता ही खतरे में पड़ जाएगी।

संक्षेप में जीएम सरसों के अनुमोदन से जैविक किसानी की निर्मम हत्या हो जाएगी। हमें विश्वास है कि आप, जो देश की कृषि के भविष्य के लिए जैविक खेती की ज़रूरत और महत्व को गहराई से समझते हैं ऐसा नहीं होने देंगे। आप से अनुरोध है कि इस से पहले की बहुत देर हो जाये, आप इस मुद्दे पर दखल दें और यह सुनिश्चित करें कि जीएम सरसों की अनुमति प्रक्रिया पर तुरंत रोक लगा दी जाए।

वैसे भी देश को जीएम सरसों की जरूरत नहीं है। सरसों की कई गैर-जीएम संकर किस्में उपलब्ध हैं जो अगर किसान चाहें तो प्रयोग कर सकते हैं। इस के अलावा सरसों में भी धान की श्री पद्धति सरीखी जड़ गहनता बढ़ाने की पद्धति के आप के अपने गृह राज्य बिहार सहित बहुत राज्यों में शानदार परिणाम मिले हैं। इन उपायों से सरसों की पैदावार में हुई बढ़ोतरी जीएम सरसों के (अपुष्ट) पैदावार वृद्धि के दावों से कहीं अधिक है।

जहाँ एक ओर जैविक खेती प्रकृति के जटिल तंत्र को समझ कर, सहजीवन आधारित खेती है वहीं इस के ठीक विपरीत जीएम प्रौद्योगिकी प्रकृति के साथ अनिश्चित और बेकाबू खिलवाड़ करती है जिस के चलते दुनिया के सबसे 'विकसित' 20 देशों में से 17 देश जीएम फसलों की खेती नहीं करते। पर्यावरण में जीएम फसलों का प्रवेश होने से न केवल खेती की लागत बढ़ती है अपितु खेती का जोख़िम भी बढ़ता है। जीएम खाद्य उत्पादों की सुरक्षा पर भी प्रश्न चिन्ह हैं। जीएम फसलों के पर्यावरण और स्वास्थ्य पर दुष्प्रभावों के पर्याप्त सबूत अब उपलब्ध हैं। इस लिए जीएम सरसों न केवल जैविक किसानों अपितु उपभोक्ताओं के लिए भी चिंता का विषय है।

महोदय, इस अवसर पर हम आप के लिए जैविक सरसों का कच्ची घानी का तेल भी उपहार में लाये हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि अगर जीएम सरसों को न रोका गया तो शायद आप के लिए ऐसे शुद्ध सरसों के तेल का आनंद लेने का यह अंतिम मौका होगा। हम देश भर के जैविक किसानों के प्रतिनिधि के रूप में आप के पास बहुत आशा और विश्वास के साथ आए हैं कि देश के कृषि मंत्री के तौर पर आप अपने अधिकार का प्रयोग कर के यह सुनिश्चित करेंगे कि जीएम सरसों को किसी भी रूप में स्वीकृति न मिले (न ही पैतृक रूप में और न ही उन की संकर संतान के रूप में)। आप से अनुरोध है कि कृषि क्षेत्र और भारत की कृषि को टिकाऊ, लाभदायक, सुरक्षित और स्वास्थ्यकर बनाने की मुहिम को बचाए रखें।

धन्यवाद सहित,

अखिल भारत सजीव खेती समाज (ओएफ़एआई) के तत्वाधान में जैविक किसानों का एक प्रतिनिधिमंडल